International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

भारतीय ऐतिहासिक महाकाव्य रामायण में गुप्तचर व्यवस्था

पोरस कुमार महावर

सहआचार्य, इतिहास
सम्राट पृथ्वीराज चौहान राजकीय महाविद्यालय, अजमेर

शोध पत्र सार

प्राचीन भारत की ऐतिहासिक ग्रंथ रामायण महाकाव्य सहस्त्राब्दियों से भारतीय उपमहाद्वीप में सामाजिक,धार्मिक और राजनीतिक व्यवस्था के अभिन्न अंग के साथ-साथ अंतदृष्टि का समृद्ध स्त्रोत भी हैं। महर्षि वाल्मीक की कृति रामायण भारतीय सभ्यता के मुख्य रुप से पौराणिक और दार्शनिक रचना होते हुए भी समसामयिक राजतंत्रीय शासकीय संरचनाओं में अंतर्निहित गोपनीय सिद्धांतों पर मूल्यवान सांस्कृतिक अवधारणा प्रदान करता हैं। जिसमें विशेषतः संगठित और सुनियोजित गुप्तचर व्यवस्था का प्रतिनिधित्व और नेतृत्व इतिहास को आकार देने वाली आन्तरिक व बाह्य सैन्य सुरक्षा की गतिशीलता पर ध्यान केन्द्रित किया गया है। अयोघ्या में राजतंत्रात्मक राज्य के सुरक्षा कवच गुप्तचर या दूत के रुप में राजा उन्हीं व्यक्तियों की नियुक्ति करता जिसमें समय व परिस्थिति अनुकूल त्वरित सोचने समझने व निर्णय लेने की गहरी समझ, राजा व राज्य के प्रति विश्वास की प्रतिबद्धता, बौद्धिक कौशलता, निर्भीकता, शक्ति के साथ उनकी महत्वपूर्ण भूमिका, राजा व राज्य के प्रति ईमानदारी से कर्तव्य और समर्पण की भावना को दर्शाता हो।अयोध्या के राजकुमार व सुरों के नायक राम के गुप्तचर हनुमान, अंगद और नल-नील थे और श्रीलंका के शासक व असुरों के नायक दशानन रावण के शुक, सारण और शार्दुल थे। रामायण की राजतंत्रीय प्रशासनिक व्यवस्था में राजा को प्रदत्त स्वतंत्र अधिकार, कार्य प्रणाली और लोक कल्याण की जिम्मेदारी केंद्रीय व्यक्ति के रुप में पदानुक्रमित प्रणाली की विशेषता रही। राजा की राजशाही कूटनीतिक रणनीतियां, न्यायिक प्रक्रियाएं तथा कुशल शासन की सफलता का श्रेय राजनीतिक मूल्यों और नेतृत्व गुणों वाले विश्वास पात्र गुप्तचरों की प्रयोज्यता का परिणाम परिलक्षित था।

संकेताक्षर शब्द: रामायण, राजतंत्रीय व्यवस्था, गुप्तचर व्यवस्था

शोध का उद्देश्यः-

- रामायण में समसामयिक परिस्थिति के अनुरुप सैद्धान्तिक दृष्टि से की गई गुप्तचरों व्यवस्था के अंतर्निहित सिद्धान्तों एवं व्यवहार का निरूपण करना।
- रामायण में व्यवस्थित गुप्तचर व्यवस्था के विषय में जानना।
- गुप्तचर व्यवस्था का तत्कालीन आवश्यकता और प्रभाव का पता लगाना।
- शोध कार्य-प्रणाली
- शोध के विषय को ध्यान में रखते हुए सम्बन्धित ऐतिहासिक तथ्यों का संग्रहण कर प्राथमिक व द्वैत्यिक स्त्रोतों के आधार पर वर्गीकृत करना।
- मौलिक तथ्यों को सम्मलित कर प्रचलित गुप्तचर प्रणाली का विश्लेषणात्मक अध्ययन करना ।
- तत्कालीन परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए प्राप्त तथ्यों की व्याख्या कर मूल्यांकन करना।

शोध की परिकल्पना:

वाल्मीकि कृत रामायण के कथानक में अयोध्या के राजकुमार राम की पत्नी सीता का लंकाधिपति रावण द्वारा अपहरण करने के कारण दोनों राज्यों के मध्य उत्पन्न युद्ध की परिस्थिति ने गुप्त रुप से राजनीतिक, रणनीतिक व सामरिक संबंधी जानकारी प्राप्त करने के लिए दोनों ओर से गुप्त अभियान में दूत व गुप्तचरों द्वारा जासूसी करवाई गई। इतिहास में युद्ध और राजकौशल के ऐतिहासिक तथ्य के रुप में गुप्तचर व्यवस्था कृति की वर्तमान में प्रासंगिकता को परिलक्षित करता है। परिकल्पना यह तर्क देती है कि रामायण एकमात्र पौराणिक कथा नहीं है,बल्कि इसमें शत्रु की कुटनीति और रणनीतिक योजना की गुप्त जानकारी के तथ्य भी समावेशित है जो असत्य या बुराई पर सत्य या अच्छाई की जीत के लिए महत्वपूर्ण थे।

विषय परिचय

महर्षि वाल्मीकि द्वारा रचित ऐतिहासिक ग्रंथ रामायण कौशल महाजनपद के महाराजा दशरथ के राजकुमार राम के जन्म से राज्याभिषेक तक के वृतांत का सांगोपांग वर्णन किया गया है। राजा दशरथ रानी कैकयी द्वारा अपने पुत्र भरत को अयोध्या का राजा बनाने के लिए भरत के बड़े भाई राम को चौदह वर्ष के लिए अयोध्या राज्य से निर्वासित कर दिया जाता है। राम अपनी पत्नी सीता और भाई लक्ष्मण के साथ वन की ओर गमन कर जाते हैं। वन में लंका राज्य के असुर प्रवृत्ति के राजा रावण (दशानन) उसके सौन्दर्य से मोहित होकर सीता का अपहरण कर लेता है। दशानन के इस कृत्य से व्यथित राम और लक्ष्मण अपने गुप्तचर वानर राजा हनुमान,अंगद और नल-नील की सैन्य सहायता से दशानन रावण को पराजित कर सीता की रक्षा करते है। चौदह वर्ष

के बनवास के उपरान्त राम,सीता और लक्ष्मण अयोध्या लौटते है और अयोध्या के सिंहासन पर कौशल नरेश के पद पर राम का राज्याभिषेक किया जाता है।

वर्तमान में प्रासंगिकता

रामायण एक प्राचीन भारतीय ऐतिहासिक महाकाव्य है जिसमें भी अयोध्या नरेश राम की प्रजावत्सलता, करुणा,कर्तव्य के प्रति अटूट प्रतिबद्धता,राम के उत्तम चारित्रिक आचरण की पवित्रता,वचनबद्धता और मर्यादा, निष्ठा और समर्पण के भाव आज भी प्रासंगिक कालातीत जीवन की प्रेरणा देते है। इसी कारण राम मर्यादा पुरुषोत्तम और ईश्वरत्व के प्रतीक विष्णु के अवतार के रुप में घर-घर में वंदनीय और पूजनीय हैं।

गुप्तचर व्यवस्था का उद्भव

ऋग्वैद में गुप्तचरों के लिए 'स्पश' 1 शब्द का प्रयोग हुआ है। ऋग्वैदिक काल में राजा इनके द्वारा राज्य एवं राज्य की प्रजा के विषय में जानकारी प्राप्त करता था। इन गुप्तचरों के अतिरिक्त दूतों का भी उल्लेख मिलता है जो दो भिन्न राज्यों के सम्बन्ध में मुख्य भूमिका निभाते थे। यह उल्लेखनीय है कि 'पुरोहित' जिन्हें राजाओं का आश्रय प्राप्त था, दो महत्त्वपूर्ण कार्य सम्पन्न करते थे। एक ओर तो वे धर्माचार्यों के रूप में इन्द्र का आह्वान करते थे ताकि उनकी कृपा प्राप्त कर अपने शत्रु दस्युओं का नाश कर सके और दूसरी और दूतों के रूप में वे अनार्यों के साथ वार्तालाप कर विवादास्पद बिन्दुओं का निपटारा करते थे।2 इस बात का भी उल्लेख है कि दूतों को देश काल एव पात्र का ज्ञान होना चाहिए। ऋग्वेद में दूतों से तीनों लोक के ज्ञान की उपेक्षा की गयी है।3

महर्षि वाल्मीकि कृत संस्कृत साहित्य का अक्षय प्रेरणा का स्त्रोत आदि काव्य रामायण के लेखन का श्रेय तमसा नदी के तट पर जब व्याध के वाण से घायल हुए क्रौंच के लिए विलाप करने वाली क्रौंची का करुण शब्द महर्षि के द्वारा सुनने पर महर्षि के मुख से करुणातिरेक का अकस्मात् निकला हुआ लौकिक संस्कृत साहित्य के आदि श्लोक को माना जाता है -

मॉ निषाद प्रतिष्ठांत्वमगम: शाश्वती: समा:।
यत् क्रौंचमिथुनादेकमवधी: काममोहितम् ।।4

अर्थात् हे निषाद! तुम चिरस्थाई प्रतिष्ठा को प्राप्त न हो क्योंकि तुमने काममोहित इस क्रौंच के जोड़े में से एक का वध कर दिया है। महर्षि वाल्मीकि का ध्यान अकस्मात् घटी इस घटना पर ही केंद्रित रहा। तभी ब्रह्मा जी वहाँ आए और उनसे कहा, 'हे ब्राह्मण! मेरे आदेश से सरस्वती तुम्हारे भीतर प्रविष्ट हुई हैं । हे श्रेष्ठ ऋषि! तुम राम का चरित श्लोकबद्ध करो।5

इस श्लोक में संस्कृत काव्य के मूल अनुष्टुप छन्द पर ही महर्षि ने सम्पूर्ण रामायण को लेखबद्ध किया। रामायण का लेखन काल लगभग 1100 ई.पू. माना है। मूल वाल्मिकी रामायण में चौबीस हजार श्लोक हैं इसी कारण इसे चतुंर्विंशतिसाहस्त्री संहिता भी कहते है।

वाल्मीकि ने 24 हजार श्लोकों, पाँच सौ सर्गों तथा उत्तरसहित सात कांडों-
बालकांड,अयोध्याकांड,अरण्य कांड,किष्किंधा कांड,सुंदर काण्ड युद्ध कांड और उत्तरकाण्ड में वर्णित है। इस जगतप्रतिष्ठित महाकाव्य 'रामायण' जिसका एक नाम दशाननवध भी था, की रचना की।6

रामायण के मूल केन्द्रीय नायक अयोध्या के राजकुमार राम को मानवीय भावनाओं तथा मानवीय सामर्थ्यसंपन्न मनुष्य के रूप में ही चित्रित किया।आदि कवि ने अपनी अद्भूत क्षमता द्वारा इतिहास के विविध विषयों को समेट कर उत्कृष्ट संस्कृत काव्य की रचना की है जिसका प्रमुख लक्ष्य मर्यादित सत्यनिष्ठ और नियतात्मा पर आधारित काव्य के मूल पात्रों के मर्यादित आदर्श चरित्र को प्रस्तुत करने के कारण राम में ईश्वरत्व अर्थात् देवत्व के स्वरुप को दर्शाया गया।

संस्कृत में एक ही श्लोक में वह बीज कथा इस रूप में रामायण प्रस्तुत की गई है-

आदौ रामतपोवनादिगमनं हत्वा मृग का´वचनं
वैदेहीहरणं जटायुमरणं सुग्रीवसम्भाषणम्।
वाली निर्दलनं समुद्रतरणं लङ्कापुरीदाहनं
पश्चाद्रावणकुम्भकर्णहननमेतद्धि रामायणम्।।

यह श्लोक संस्कृत संप्रदाय में एक श्लोकी रामायण के नाम से प्रसिद्ध है। इसमें कहा गया है कि- पहले राम का (विश्वामित्र के साथ) तपोवन आदि में जाना, स्वर्णमृग को मारकर (मारना), सीता का हरण, जटायु की मृत्यु, सुग्रीव के साथ बातचीत (त्रसन्धि), वाली वध, समुद्रतरण, लंका दहन, और अंत में रावण और कुंभकर्ण का हनन- मानव संस्कृति में उद्बोधित महाकाव्य रामायण का मूल कथानक तथा सार है। इस ग्रंथ के शाश्वत मूल्य सभी पर अपना अमिट प्रभाव छोड़ते हैं, साथ ही राम के समान जीवन जीने के लिए प्रेरित भी करते हैं। ज्ञान, विद्या, कर्तव्य, व्यवहार, नीति, राजनीति, निःस्वार्थ कर्म, परहित, मित्रता, बंधुत्व, त्याग, बलिदान, प्रशासन, धर्म, भक्ति, मुक्ति आदि की शिक्षा इस ग्रंथ से स्वतः ही मिल जाती है। रामायण की महत्ता को प्रतिपादित करते हुए डा. धर्मपाल शास्त्री लिखते हैं, 'महर्षि वाल्मीकि ने प्रसिद्ध रामकथा के माध्यम से अपनी अलौकिक काव्य तूलिका द्वारा वेदों और उपनिषदों में वर्णित सर्वोच्च मानव संस्कृति के शाश्वत और स्वर्णिम तत्वों का एक आकर्षक, भव्य और अद्भुत चित्र प्रस्तुत किया है जो प्राचीन होते हुए भी नवीन है, मानवीय होते हुए भी दिव्य है। सहस्त्राब्दियों में जितना लौकिक और पारलौकिक कल्याण रामायण ने किया है, उतना किसी अन्य ग्रंथ ने नहीं किया। कालक्रम से आदिकाव्य होने के कारण इसका प्रभाव बाद के काव्यातमक विधाओं पर परिलक्षित हुआ।' आचरण

की पवित्रता का रामायण में दृढ़ता, मनोहरता और रसिकता से निर्वाह हुआ हैं। काव्य संसार में यह ही ऐसा ग्रंथ है, जो मानव-हृदय में सौंदर्यपूर्ण शैली में सत्य, प्रेम उत्पन्न करने की शक्ति रखता है।7

रामायण ग्रंथ के शोध अध्ययन से ज्ञात होता है कि तत्कालीन समय में गुप्तचरों को चर,प्रणिधि,चारक आदि नामों से सम्बोधित किया गया है। प्राचीन भारतीय राजनीतिक विचारकों ने चरों की नियुक्ति राजा व राजतंत्र की सुरखा के लिए आवश्यक बताया है। अयोध्या तथा श्रीलंका की राजनीतिक व्यवस्था में एक नियमित गुप्तचर विभाग था। महाराजा दशरथ के मंत्रिगण चरों द्वारा शत्रुओं की गतिविधि से अपने को अवगत रखते थे।8
महाराजा दशरथ गुप्तचरों द्वारा शत्रु राज्य की गतिविधियों पर दृष्टि रखते थे, प्रजा का धर्मपूर्वक पालन करते हुए अधर्म से दूर रहते थे।9
एक राजा को सबसे ज्यादा खतरा बाह्य व्यक्तियों के षड़यन्त्रों से अधिक उसके नजदीक रहने वाले सम्बन्धियों मंत्रियों और असन्तुष्ट सैनिकों से होता है।
न यह च्चाच्च ं तनुत्राणं रक्षेदात्मानयात्मना।
चार भूमिण्वभिगतान पाशांश्च पविजयेत।।10
महाकाव्य काल के अन्तर्गत रामायण में गुप्तचरों की विशद जानकारी मिलती है। इसमें हमें बालकाण्ड, अयोध्याकाण्ड और अरण्यकाण्ड,किष्किन्धाकाण्ड,सुन्दरकाण्ड और युद्धकाण्ड में विस्तार से जासूसी प्रथा का पता चलता है। बालकाण्ड में राजा दशरथ के राज्य व्यवस्था का वर्णन है। उनका प्रशासन सभी तरह से पूर्ण था। सजग जासूसों के कारण महाराजा दशरथ एक कुशल प्रशासक थे। दशरथ के मन्त्रियों से अपने या शत्रु पक्ष के राजाओं की कोई भी बात छिपी नहीं रहती थी। दूसरे राजा क्या करता है, क्या कर चुके है और क्या करना चाहते थे, ये सभी बातें गुप्तचरों द्वारा उन्हें मालूम रहती थी।
“तेषामविदित किचित् स्वेषु नास्ति परेषु वा।
क्रियमाणं कृत वापि चारेणापि चिकीर्षित्म।”11
महाराजा दशरथ गुप्तचरों द्वारा सब बातों का पता लगाकर प्रजा का पालन करते हुए प्रजावत्सल थे। रामायण काल में ऐसी अवधारणा थी कि जिस राजा के गुप्तचर सजग नहीं है, वह राज्य का अधिकारी नहीं है। उस राजा को अयोग्य मानकर प्रजा उसका त्याग कर देती थी।
अयोध्याकाण्ड में वर्णन है कि जब रामचन्द्र चित्रकूट पर्वत पर निवास कर रहे थे उस समय उनके छोटे भाई भरत अयोध्या से उनसे मिलने आये। भरत को उन्होंने कहा, हे भरत! दूसरे राष्ट्रों के 18 तीर्थों तथा अपने पक्ष के प्रधान मंत्री, पुरोहित, युवराज को छोड़कर अन्य 15 पदों पर नियुक्त व्यक्तियों का पूरा संवाद तो तुम जानते हो ? उन कार्यों में नियुक्त तुम्हारे गुप्तचर आपस में

एक-दूसरे को न जानते हुए तथा दूसरे व्यक्तियों से सर्वथा अज्ञात रहते हुए अपने तथा परराष्ट्रों के 18 पदों पर नियुक्त व्यक्तियों का ठीक-ठाक पूरा संवाद जानकर तुम्हारे पास भेजते तो रहते हैं।

"कश्चिदष्टादशान्येषु स्वपक्षें दश पंच्च च।
त्रिमिस्त्रिमिरविज्ञातैर्वेत्सि तीर्थानि चार कैः।।12

भारतीय नीतिशास्त्रों ने राजो को 'चार-चक्षु' कहा है। ये चार चक्षु जिसके नहीं है वह राजा अन्धा है। 18 तीर्थों पर नियत रूप से कार्य करने वाले अपने तथा पर राष्ट्रों के व्यक्तियों के विशेष भेद को जानने के लिए सर्वत्र विचरणशील चार लोगों के लिए जो विशेष शिक्षा की व्यवस्था प्राचीन भारत में थी, वह वास्तव में विकसित गुप्तचर-व्यवस्था का परिचायक है। अरण्यकाण्ड में भी गुप्तचर का वर्णन है। जब लक्ष्मण ने शूर्पणखा के नाक और कान काट लिए तों वह गुस्से में अपने भाई रावण को फटकारती हुई उसने कहा कि जो राजा राज्य की देखभाल के लिए गुप्तचरों को नियुक्त नहीं करता है, ऐसे राजा को प्रजा दूर से ही त्याग देती है।

अयुक्तचारं दुदर्शमस्वाधीनं नराधिपम्।
वर्जयन्ति नरा दूरान्नदीपकमिव भिवाः।।13

शूर्पणखा फिर कहती है कि जो अपने मन को काबू में रखने वाला एवं प्रयत्नशील है, उन देवताओं, गन्धर्वोें तथा दानवों के साथ विरोध करके तुमने अपने राज्य की देखभाल के लिए गुप्तचर नही ं नियुक्त किये, ऐसी दशा में तुम जैसा चंचल पुरुष कैस राजा बना रह सकेगा।14 इससे पता चलता है कि राज्य व्यवस्था को सुचारू रूप से चलाने के लिए गुप्तचर कितने आवश्यक अंग थे। शूर्पणखा के इस कथन से यह स्पष्ट होता है कि अपने विश्वस्त गुप्तचर के बिना कोई भी राजा राज्य नहीं चला सकता। यहां सिद्धान्त एव ं व्यवहार दोनों का वर्णन किया गया है। सिद्धांत से तात्पर्य है कि बिना गुप्तचर के राजा की कल्पना भी नहीं की जाती थी। प्रजा उसको स्वीकार ही नहीं करती थी। प्राचीनकाल में प्रजा इस बात की कल्पना भी नहीं कर सकती थी कि गुप्तचर विहीन राजा कैसे होते हैं। व्यवहार में रावण देवताओं एवं ऋषियों में शत्रुता लेता है। किन्तु उसके गुप्तचर सजग नहीं है। जिन राजाओं के गुप्तचर, कोष और नीति ये सब अपने अधिन नहीं रहते, वे साधारण लोगों के समान ही हैं। प्रजा के समक्ष उनका कोई महत्त्व नहीं रहता।

येषां चाराश्च कोषाश्च नपश्य जयतांवर।
अस्वाधीनां नरेन्द्रणां प्राकृतैस्ते जनैः समाः।।15

इस वर्णन से यह स्पष्ट है कि किसी भी राजा को किसी भी काल में राज्य चलाने के लिए उनके गुप्तचर कितने आवश्यक हैं। गुप्तचर के बिना राजा को गुणों से वंचित माना गया है।

रामायण महाकाव्य में गुप्तचर व्यवस्था का स्पष्ट वर्णन मिलता है। रामायण के शोध अध्ययन से गुप्तचर-व्यवस्था के दोना पक्ष सिद्धान्त एवं व्यवहार का ज्ञान विद्यमान है। अनेक स्थलों पर राजा को इस तरह के उपदेश दिए गए हं कि उनके गुप्तचर कैसे होने चाहिए। जो यह दर्शाता है कि राजा गुप्तचरां का प्रया ेग किन-किन कार्यो के लिए करते थे। रावण अपने शुक एव ं सारण नामक गुप्तचर को राम की सेना का पता लगाने के लिए भेजता है।16 जिसमें सेना की शक्ति, उनके मनोनुकूल मंत्री, कौन-कौन से शूर-वीर लड़ाई में आगे रहेंगे। इसी तरह राम के गुप्तचर अनल, पनस, सम्पति और प्रमति ने भी लंका जाकर रावण की सेना की शक्ति एवं अन्य बातों का पता लगाकर राम को सूचना दी थी। रामायण काल में गुप्तचर पक्षी एवं बन्दर का रूप धारण कर कार्य करते थे।

गुप्तचरों की विशेषताएं या मुख्य कर्त्तव्य

गुप्तचर के रुप में उस व्यक्ति को नियुक्त किया जाता है जो उत्तम श्रेणी के चरित्र के साथ-साथ बुद्धि व सतर्कता, सदाचारी, मृदभाषी, चेतन, निर्णय लेने या तीव्र क्षमता, क्रियाशील, दूरदर्शी, बुद्धिमान, भ्रष्टरहित, सन्तुष्ट रहने के साथ किसी भी स्थिति का विश्लेषण करने की योग्यता को धारण करता हो। राजनैतिक विषयों पर कार्य करने वाले लेखकों ने वर्णन किया है कि एक निपुण गुप्तचर को विभिन्न प्रकार की कलाओं और विज्ञान की पूर्ण जानकारी होनी चाहिए। उसे मानव मनोविज्ञान के विकसित रूप का ज्ञान होना चाहिए ताकि वह सामने वाले व्यक्ति के आन्तरिक विचारों और भावनाओं का सही प्रकार से मूल्यांकन कर सके।17 इसके साथ-साथ अपने राजा के प्रति वफादार होना चाहिए और एक अच्छे चरित्र को धारण करने वाला होना चाहिए।एक गुप्तचर के पास उच्च श्रेणी की योग्यताएँ होनी चाहिए जैसे वे दूसरों के मन के विचारों को जान सके, अच्छी स्मरण शक्ति, उनका अनुभवी होना, व्यंग्यात्मक और तीव्र बुद्धि जैसी योग्यताएं होनी चाहिए। गुप्तचरों का मुख्य कर्त्तव्य राजा व राज्य के हित और अहित तथा पड़ौसी राज्यों के विषय में गुप्त जानकारी प्राप्त करना था।गुप्तचर व्यवस्था में सबसे महत्त्वपूर्ण तथ्य यह था कि सभी गुप्तचरों का पुरी तरह से निरीक्षण करने के बाद उनको गुप्तचरी के लिए नियुक्त किया जाता था। यह नियुक्ति की प्रक्रिया भी गुप्त रूप से की जाती थी। ताकि वे एक-दूसरे को न पहचान सके। अपने स्वामी का संदेश शत्रु तक पहुंचाना और इसका प्रत्युत्तर अपने राजा के पास भेजना,अवसर आने पर बल प्रदर्शन करना,गुप्तचरों के संवादों का समूचित संग्रह करना आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करना भी प्रमुख कर्त्तव्य था।18

रामायण महाकाव्य में राम के प्रमुख कूटनीतिज्ञ गुप्तचर हनुमान ने माता सीता का पता लगाने के बाद लंका के गुप्त रहस्यों की खोज,सेना की शक्ति,खाई,दुर्ग,सीमा विस्तार के विषयों का पता लगाया साथ ही अवसर आने पर अपना बल प्रदर्शन भी किया।स्वयं हनुमान सीता माता की खोज के बाद लंकाधिपति दशानन रावण की वैचारिक असुरी प्रवृत्ति की भी महत्वपूर्ण जानकारी प्राप्त

करना चाहते थे। कदाचित इसीलिए उन्होंने अशोक वाटिका का विध्वंस किया, क्योंकि हनुमान का मंतव्य था कि गुप्तचर को सौंपा गया प्रमुख कार्य के सम्पन्न हो जाने पर दूसरे बहुत से कार्यो को गुप्त रुप से सिद्ध कर लेता है और पहले के कार्य में अवरोध भी आने नहीं देता,वहीं गुप्तचर के रुप में किये गये कार्य को सिद्ध कर सकता है।19 हनुमान ने किष्किन्धा लौटकर राम और सुग्रीव को अवगत कराया। दूत अंगद को लंका के शासक दशानन रावण व राम के बीच मध्यस्था के लिए लंका भेजा जाता है, अंगद अपने स्वामी श्रीराम की प्रशंसा करता है और रावण को निर्बल बताकर उसका अपमान करता है।अंगद-रावण संवाद में अंगद द्वारा वक्रोक्तिरुपी धनुष पर वचन रुपी बाणों को चढ़ा रावण के हृदय में आक्रोश पैदा करने के कारण रावण क्रोधित हो जाता है20 परन्तु वह कूटनीतिज्ञ और विद्वान राजा था। वह अंगद से कहते है कि नीति के अनुसार वह किसी दूत की हत्या नही ं कर सकते इसलिए वह इसे मुक्त कर रहे हैं। अंगद ने भी अंहकारी लंकाधिपति दशानन रावण की निजी और दरबार की सम्पूर्ण जानकारी एकत्रित कर राम को अवगत कराया। नल और नील ने गुप्त रुप से राम की वानर सेना के लिए लंका तक पहुंचने का सामुद्रिक मार्ग सेतु बनाने में मदद की।21

लंकाधिपति दशानन के पास कई शक्तिशाली योद्धा और सलाहकार थे जो उसकी सेना व राज्य की रक्षार्थ गुप्त रुप से जानकारी जुटाने और शत्रु की गतिविधियों पर नजर रखने का काम करते थे जैसे-कुम्भकरण,मेघनाद,अहिरावण,अतिकाय,नरान्तक,देवान्तक और त्रिशिरा। सीताहरण के पश्चात् लेका के दशानन ने आठ असुर गुप्तचरों की नियुक्ति की। जिनका कार्य राम व लक्ष्मण की गतिविधियों की सूचना उसे देते रहें और राम वध के लिए प्रयत्न भी करते रहें।22

शत्रु सेना में फूट डालने की नीति का असुर गुप्तचर शुक ने राम और सुग्रीव के मध्य संबंधों में मतभेद करने की कोशिश की परन्तु विभीषण की मायावी शक्ति के कारण असफल हो गया।23 लंकाधिपति असुर दशानन रावण ने शुक,सारण तथा शार्दुल के नेतृत्व में गुप्तचरों को भेजा था। शार्दुल अत्यन्त कुशल व निपुण गुप्तचर था जिसने अपनी पूर्ण सुरक्षा व सतर्कता के साथ वानर सेना की व्यूह रचना का सम्पूर्ण वृत्तान्त अपनी आंखों से देखा और लौटकर अपने असुर राजा को सूचित किया।24

रामायण में लंका का राजा दशानन रावण राम के शिविर में अपने गुप्तचरों को भेजता है जिससे उसे शत्रु की सेना की सही संख्या और उनकी प्रकृति व उनके उचित स्थान का पता चल सके। रावण स्वयं कहते हैं कि जो राजा शत्रु सेना के विषय में जानकारी लेने के लिए गुप्तचरों का प्रयोग करता है। वह अपने शत्रु को सरलता से पराजित कर सकता है।25

रामायण में जब विभीषण अपने भाई रावण से मतभेद कर राम के पास चला जाता हैं तो रावण को ज्ञात हो जाता है कि जल्दी ही युद्ध हो सकता है और वह तुरन्त अपने गुप्तचर शुक को सुग्रीव से बातचीत के लिए भेजता है। शुक सुग्रीव से कहता है कि रावण के द्वारा तुम्हें कोई

हानि नहीं पहुंचायी जाएगी। क्योंकि आप रावण के भाई समान हो, इसलिए तुम्हें वापिस अपने राज्य में लौट जाना चाहिए। इतना कहकर शुक पक्षी का रूप धारण कर आकाश में उड़ जाता है। लंका पहुंचकर शुक रावण का सुग्रीव का सारा वर्णन सुनाता है सुगीव ने कहा है कि रावण न तो हमारा मित्र है और न ही हमारा शुभचिंतक।सुग्रीव ने शुक के प्रस्ताव को अस्वीकार कर दिया तथा धर्म के प्रति अपनी प्रतिबद्धता और राम की धार्मिकता में अपना विश्वास व्यक्त किया। हम लंका पर अपनी सेना के साथ जल्दी ही आक्रमण करेगे। राम व लक्ष्मण उसके साथ सेनापति के रूप में कार्य करेगे। इस प्रकार से सुग्रीव रावण की गुप्तचर नीति का शिकार नहीं हुआ।26

रावण के गुप्तचर 'शुक' और 'सारण' वानरों का रूप धारण करके राम की सेना के अन्दर प्रवेश करते हैं जिससे उन दोनों को विभीषण की मायावी शक्ति के द्वारा पहचान लिया जाता है। उन दोनों को बन्दी बनाकर राम के पास ले जाया जाता है फिर उन्हें छोड़ दिया जाता है। रावण पुनः राम की सेना की गतिविधियों को जानने के लिए गुप्तचर भेजता है। रावण के ये गुप्तचर 'शार्दुल' के नेतृत्व में कार्य करते थे। ये गुप्तचर राम की बड़ी सेना को देखकर चिन्तित हो जाते है। इन दोनों को भी विभीषण के द्वारा बन्दी बना लिया जाता है। परन्तु बाद में उन्हें छोड़ दिया जाता है। जिससे ये गुप्तचर सेना की शक्ति को जानने का प्रयत्न करते थे।27

विभीषण ने भी अपने गुप्तचर जैसे- अनाला, पानसा और सम्पति को रावण की युद्ध सम्बन्धी नीति को समझने के लिए विशेष रूप से नियुक्त किया था। ये गुप्तचर पक्षियों का प्रच्छन्न भेष बनाकर रावण की सेना का परीक्षण व निरीक्षण कर गुप्त रुप से पता लगााते थे कि रावण के मुख्य अधिकारी प्रहस्ता, महाप्रसवा, इन्द्रजीत, शुक, सारण व शार्दुल अपनी-अपनी सेना के साथ कहाँ पर तैनात किए गए है। अपने शिविर मे वापिस जाने पर वे विभीषण को रावण द्वारा की गई युद्ध व्यवस्था के बारे में बताते है। विभीषण द्वारा राम को इस व्यवस्था से अवगत करवाया जाता है जिस आधार पर राम अपनी रणनीति पर कार्य करते है।28

रामायण में स्त्रीं गुप्तचर 'सरमा' के विषय में बताया गया है जो विभीषण की पत्नी थी व जिसे रावण ने सीता पर नजर रखने के लिए नियुक्त किया था। परन्तु वह सीता की मित्र बन जाती है। जिससे वह रावण की कूटनीति व युद्धनीति की सूचना सीता को देने लगती है। क्योंकि वह रावण की शक्ति से परिचित थी। वह उस स्थान पर भी जाती है जहां असुर युद्ध नीति पर चर्चा करते है और वह इसकी सूचना सीता व विभीषण तक पहुंचाती है।29

गुप्तचरों की श्रेणियाँः-

महाकाव्यकालीन रामायण में गुप्तचरी की दो मुख्य श्रेणियों का उललेख है 1. जनसाधारण के लिए गुप्तचर- रामायण के उत्तरकाण्ड में वर्णन मिलता है कि सीता की आलोचना के विषय में राम को उसके जन साधारण गुप्तचरों ने ही सूचित किया था।30 सुग्रीव ने हनुमान को एक

गुप्तचर के रूप में राम और लक्ष्मण की भावना का पता करने के लिए भेजा था जिससे वे एक ऋषि मुनि के भेष में गए थे-

कपिरूप परित्यज हनुमान मारुतात्मजः।
भिक्षुरुप ततो भेजे बुद्धितिया कपिः।।31

2. सैन्य गुप्तचर- इनकी कार्य प्रणाली अधिक जटिल व खतरों से भरी हुई थी। राजा और सेनापति अपनी सना की शक्ति का अनुमान अपने गुप्तचरों के माध्यम से ही करते थे। इन गुप्तचरों की नियुक्ति बड़ी कुशलता से की जाती थी। ताकि शत्रु राज्यों की अनिश्चित गतिविधियों व उनके सभी क्षेत्रों की सम्पूर्ण जानकारी प्राप्त हो सके। इस प्रकार इन गुप्तचरों को सैन्य श्रेणी के गुप्तचर कहा जाता था। यहाँ तीन गुप्तचरों के विषय में उल्लेख किया गया है जो एक-दूसरे को नहीं जानते थे व जिनका कार्य अठारह तीर्थो की देखभाल करना था।32

रामायण मंे वर्णन मिलता है कि राजा को भी अपनी गुप्त नीति के प्रति समर्पित रहना चाहिए। जबकि ऐसा माना जाता है एक राजा के पास अपने गुप्तचरो के रुप में हजारों आंखे है। उसे स्वंय भी अपने राज्य की सत्य के लिए विभिन्न गतिविधियों के विषय में जांच करनी चाहिए।33

गुप्तचरों द्वारा सांकेतिक भाषा का प्रयोग

महाकाव्यकालीन रामायण में सांकेतिक भाषा का प्रयोग किया गया है। उदाहरण के लिए जब सीता अशोक वाटिका में थी, तो हनुमान राम का संदेश विशेष भाषा में ही देता है व संकेत के रूप में राम द्वारा दी गई अंगूठी सीता को दिखाते हैं।34

गुप्तचरों की निपुणता या तकनीक

गुप्तचर राज्य के आधार स्तम्भ है। इसमें गुप्तचरों को राजा के नेत्रों के समान बताया गया है। गुप्तचरों के माध्यम से ही एक राजा अपने मित्रों, शत्रुओं की गतिविधियों पर नजर रख सकता था। राजनीति के षडयन्त्रों से बचने के लिए गुप्तचर व्यवस्था की स्थापना अति आवश्यक होती है।

रामायण में तो गुप्तचरों को विज्ञान और कला तकनीक में पूर्ण रूप से निपुण बताया गया है। राम अपने गुप्तचरों को नियुक्त करता है। अपार शारीरिक और आध्यात्मिक शक्ति के प्रतीक हनुमान में समुद्र को लांघने, हवा में उड़ने की शक्ति, अपने शरीर को लघु व विशाल रुप में दर्शाने,द्रोणगिरी पर्वत को उठाने और गदा चलान में निपुण थे। अंगद अतिबलशाली थे तथा नल-नील वास्तुकला में प्रवीण थे।

रामायण में गुप्तचर तकनीक के लिए सुग्रीव के सक्रिय गुप्तचर रावण के भाई विभीषण पर काफी समय तक नजर रखते है। इसमें एक पूर्व नियोजित अभियान के माध्यम से विभीषण को बन्दी बनाकर राम के सामने लाया जाता है। विभीषण को बन्दी बनाने से पहले ये गुप्तचर

International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

उसके व्यवहार व उसकी क्रियाओं का विश्लेषण करते है। ताकि उन्हें ये स्पष्ट रूप से जानकारी मिल सके कि वास्तव में विभीषण कोई गुप्तचर है या फिर कोई दूत है।35

राम और विभीषण द्वारा लेका में भेजे गये गुप्तचरों ने बड़ी ही कौशलता और निपुणता से रावण सेना की शक्ति, रणनीति तथा युद्धों की योग्यताओं के विषय में जानकारी प्राप्त की। ये गुप्तचर लंका में सीता को खोजते हुए रावण की युद्ध प्रणाली के विषय में सूचनाएं एकत्रित की और इसके साथ ही विभीषण की गतिविधियांे को ध्यान रखने के लिए भी आन्तरिक रूप से गुप्तचर नियुक्त किए जाते थे।दूसरी ओर रावण ने भी राम के शिविरों में उनकी शक्ति उनकी संख्या और सैनिक स्थिति व गतिविधियों की सुचनाओं को प्राप्त करने के लिए शक्तिशाली विश्वसनीय गुप्तचर शुक, सारण और अहाला आदि गुप्तचरों को भेजा परन्तु विभीषण की सावधानी से उसके गुप्तचर पकड़ लिये जाते है और बाद में इनको क्षमा कर छोड दिया जाता है, जो राम की दयालुता व उदारता का प्रतीक है, रावण इस अभियान में विफल हो जाता है। राजनीति के षडयन्त्रों से बचने के लिए गुप्तचर व्यवस्था की स्थापना अति आवश्यक होती है।36

रावण के द्वारा भेजे गए गुप्तचर जो राम की शुक व सारण वानरों के भेष में आते है। जिससे विभीषण द्वारा मायावी शक्ति से उन्हें पहचान लिया जाता है और इससे यह भी सिद्ध होता है कि राम के पास विश्वासपात्र व समृद्ध गुप्तचर थे क्योंकि रावण के प्रच्छन्न भेषधारी गुप्तचरों की पहचान करना इतना सरल कार्य नही ं था। रावण के गुप्तचर भी बुद्धिमान और इनके प्रति निष्ठावान थे। विभीषण ने अपने भाई रावण के विरूद्ध अनल, सरभा, सम्पति और प्रदहसा नामक गुप्तचरों को नियुक्त किया था। जिससे वे रावण की युद्ध नीति के बारे मंे सूचनाएं प्राप्त होती रहे वे उसके द्वारा भेजे गए गुप्तचरों की भी जानकारी मिलती रहे।

निष्कर्ष

भारतीय संस्कृति के धरोहर रामायण महाकाव्य के वैज्ञानिक और विस्तृत विश्लेषण पर आधारित अज्ञात के विरुद्ध आत्मरक्षा तंत्र के रुप में उत्पन्न राजा के चक्षु व शासन व्यवस्था का अभिन्न अंग गुप्तचर व्यवस्था रही है। राज्य की सत्ता, बाहय-आन्तरिक सुरक्षा,शांति व स्थिरता के साथ ही संप्रभुता को बनाये रखने के लिए अदृश्य नीति परन्तु अत्यंत महत्वपूर्ण है। राज्य की सुरक्षा को सुनिश्चित करने के लिए बुद्धि,निष्ठा और अनुभवों के आधार यह एक ऐसी गुप्त संगठित व्यवस्था, प्रक्रिया या गतिविधि है जिसकी प्रकृति राजा के दरबार के राजनीतिक, आर्थिक या औद्योगिक षडयन्त्रों या अन्तर्कलह, राज्य विरोधी अभियानों, शत्रुओं की गतिविधियों,सूचनाओं व सैन्य रणनीतियों के परिदृश्य,अपराधों की रोकथाम और कूटनीतियों के संबंध में अपरिहार्य साधन के रुप में गुप्त जानकारी रखने व संग्रहित करने के लिए विश्वसनीय

व्यक्तियों को ही राजा द्वारा संगठित गुप्तचरों की श्रेणी में नियुक्त किया जाता था। जिसका कार्य वह गुप्त रुप से वह जानकारी एकत्रित करना था जो सार्वजनिक नहीं होती है।गुप्तचर राजा व राज्य के खिलाफ होने वाली हर उस घटना की गुप्त तरीकें से निगरानी और जानकारी रखता है जो घटित होने से पूर्व राजा को देकर राज्य के हितार्थ, उस अनहोनी होने से पूर्व ही गुप्त रुप से सतर्क कर राज्य के रणनीतिक हितों की रक्षा करता है।राज्य के प्रत्येक क्षेत्र में एक सुरक्षा कवच की भांति कार्यरत गुप्तचर प्रणाली वर्तमान में मानव इतिहास का एक अभिन्न अंग बन गई है,जो अपरिहार्य साधन के रुप में गुप्त जानकारी संग्रह,प्रसंस्करण,उपभोग और गुप्त संचालन का विस्तृत विवरण प्रदान करती है। गुप्तचर व्यवस्था राज्य के साथ-साथ राजा के निजी जीवन,निजी उपयोग की वस्तुओं,वस्त्र और विषयुक्त भोजन से भी रक्षा करती है। एक क्रोधित योद्धा का बाण केवल एक ही व्यक्ति को मार सकता है परन्तु राजतांत्रिक नीतियां पूरे सामाज्य को समाप्त कर सकती है। इस प्रकार शासकों द्वारा बनाई गई गुप्तचर नीति का अनुसरण कर अपने उद्देश्य को पूरा किया जाता था।गुप्तचर राज्य के प्रत्येक क्षेत्र में एक सुरक्षा कवच की तरह कार्य करते थे।
रामायण में स्पष्ट प्रमाण मिलता है कि गुप्तचर न केवल उपस्थित थे बल्कि वे कई रूपों में विद्यमान होते थे व प्रशासनिक ढाँचे का महत्त्वपूर्ण अंग होते थे। राज्य में एक नियमित गुप्तचर विभाग व व्यवस्था होती थी। जो इस प्रणाली के गुप्तचरों से प्रत्यक्ष रूप में सम्बन्धित होती थी तथा इनकी कार्य प्रणाली को निर्देश व आज्ञा देने का कार्य करती थी।

सन्दर्भित ग्रन्थ

1. ऋग्वेद, 1, 25, 13
2. ऋग्वेद, 1, 33, 8,
3. ऋग्वेद, 1, 8, 8
4. वाल्मीकि रामायण 2.15
5. वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड़ 2. 31-32
6. वाल्मीकि रामायण बालकाण्ड 4. 5-7
7. शास्त्री धर्मपाल ; रामायण का दार्शनिक स्वरुप, काशी,1985,पृष्ठ 14
8. वाल्मीकि रामायण 1.7.9
9. वाल्मीकि रामायण 1.7.21
10. महाभारत, शान्तिपर्व, 120/14
11. रामायण, बालकाण्ड, सर्ग-7, श्लोक 9
12 रामायण, अयोध्याकाण्ड, सर्ग-100, श्लोक 36

13. अरण्यकाण्ड, 33, 9
14 अरण्यकाण्ड, 33, 7
15. अरण्यकाण्ड, 33, 9
16. रामायण, युद्धकाण्ड, 29, 21
17 पण्ड़ित शिव शंकर ; आदि काव्य रामायण, अयोध्या, श्रीराम प्रेस,1974, पृष्ठ 73-74
18.उपर्युक्त, पृष्ठ 75
19. वाल्मीकि रामायण 5.41.5
20. वाल्मीकि रामायण,युद्ध काण्ड 37 अंगद-रावण संवाद
21.वाचस्पति,उमाशंकर; मर्यादापुरुषोत्तम राम,वृन्दावन,1998,पृष्ठ 49
22. वाल्मीकि रामायण 3.54.26.27
23. वाल्मीकि रामायण 6.20.8.15
24. वाल्मीकि रामायण 6.30.1.6
25. रामायण युद्धकाण्ड, 25, 9
26. पण्ड़ित शिव शंकर, वही, पृष्ठ 82
27. रामायण, किष्किंधा काण्ड, सर्ग 3,4,5
28. रामायण, युद्धकाण्ड, 21, 13,
29. रामायण युद्धकाण्ड 20/8-15
30. आचार्य, विष्णु ; रामायण की आध्यात्मिकता, बनारस,शिव प्रेस,पृष्ठ 103
31. रामायण, किष्किंधा कांड, प॰-112
32 आचार्य, विष्णु ; वही,पृष्ठ 104
33. वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड, 2/37-38,28/37-38
34. वाल्मीकि रामायण, सुन्दरकाण्ड, 16-39

,